بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob 9682536974 E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-09.02.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع گورداسپور (پنجاب)

ओहद के युद्ध में सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमओीन के बलिदानों तथा इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 09 फ़रवरी 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- ओहद की लड़ाई के संदर्भ में अबू सुफ़यान के नारों का वर्णन हो रहा था जिसमें वह अपने बुतों की बड़ाई बयान कर रहा था तथा उस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुदा तआला के लिए स्वाभिमान की अभिव्यक्ति थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हदीसों में आता है कि ओहद के युद्ध में अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से कहा कि हमारे समर्थन में हमारा उज़्ज़ा नामक बुत है किन्तु तुम्हारे समर्थन में कोई बुत नहीं, तो उस समय रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से फ़रमाया कि तुम कहो- لَنَا مَوْلَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ हमारा मौला तथा हमारा सहायक, हमारा हय्यु व क़य्यूम ख़ुदा है, परन्तु तुम्हारा कोई मित्र एवं सहायता करने वाला नहीं।

आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि सत्य का कैसा अद्भुत प्रमाण था कि तलवारों के साए में भी उन्होंने यही कहा कि अल्लाह हमें बचा सकता है।

फिर आप रज़ी. एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि जब मुसलमानों के कानों में यह आवाज़ पड़ी कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं तो जल्दी जल्दी वापस लौटे तथा उन्होंने आप स. के ऊपर से शवों को उठाया तो पता चला कि आप स. अभी जीवित हैं। उस समय एक सहाबी ने अपने दांतों से आप स. के युद्ध कवच का एक कील निकाला जिससे उनक दो दांत टूट गए थे। आप स. कुछ सहाबियों का एक दल लेकर पहाड़ी के दामन में चले गए।

उस अवसर पर अबू सुफ़यान ने बुलन्द आवाज़ से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिया, फिर हज़रत अबू बकर रज़ी. का, फिर हज़रत उमर रज़ी. का नाम लेकर कहा कि हमने इनको मार दिया है। जब अबू सुफ़यान ने देखा कि कोई जवाब नहीं आया तो उसने नारा लगाया, हुब्ल की शान

बुलन्द हो, हुब्ल की शान बुलन्द हो। सहाबियों को चूंकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बोलने तथा उत्तर देने से मना फ़रमाया था इस लिए वे चुप रहे। परन्तु ख़ुदा का वह रसूल जिसने अपने मौत की ख़बर सुन कर कहा था, चुप रहो, जवाब मत दो। हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. की मृत्यु की सूचना सुन कर कहा था कि चुप रहो, जवाब मत दो तथा जो बार बार कहता था कि इस समय हमारी सेना बिखरी हुई है तथा शंका है कि दुशमन फिर हमला न कर दे, इस लिए चुपचाप उसकी बातें सुनते चले जाओ। उस पवित्र इंसान स. के कानों में जब आवाज़ पड़ी कि हुब्ल की शान बुलन्द हो, हुब्ल की शान बुलन्द हो, तो उसकी तौहीद के भाव ने ज़ोर मारा क्यूँकि अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सवाल नहीं था, अब अबू बकर रज़ी. व उमर रज़ी. का सवाल नहीं था, अब अल्लाह तआला की प्रतिष्ठा का सवाल था। आप स. ने बड़े जोश के साथ फ़रमाया- तुम क्यूँ जवाब नहीं देते। सहाबा रज़ी. ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हम क्या उत्तर दें? आप स. ने फ़रमाया- कहो अल्लाह अज़्ज़ोजल, अल्लाह अज़्ज़ोजल। हुब्ल क्या चीज़ है, ख़ुदा तआला की शान बुलन्द है, ख़ुदा तआला की शान बुलन्द है। तौहीद के प्रति यह कितनी शानदार अभिव्यक्ति आप स. की भावना में है। आप स. ने तीन बार सहाबियों को जवाब देने से रोका, जिससे पता चलता है कि आप स. को ख़तरे की संभावना का पूरा आभास था। आप स. जानते थे कि इस्लाम की सेना तितर बितर हो गई है तथा बहुत कम लोग आप स. के साथ हैं, अधिकांश सहाबी ज़ख़्मी हो गए हैं तथा शेष थके हुए हैं। यदि दुशमन को यह पता चल गया कि इस्लाम के सेना का एक भाग जमा है तो वे कहीं फिर से हमला करने का दुस्साहस न करे, परन्तु इन प्रस्थितियों के बावजूद जब ख़ुदा तआला की प्रतिष्ठा का सवाल आया तो आप स. ने चुप रहना सहन नहीं किया और समझा कि दुशमन को चाहे पता लगे या न लगे, चाहे वह हमला करे तथा हमें मार दे, अब हम चुप नहीं रहेंगे। अतः आप स. ने सहाबा रज़ी. से फ़रमाया- तुम चुप क्यूँ हो, जवाब क्यूँ नहीं देते कि अल्लाह अज़्ज़ोजल अल्लाह अज़्ज़ोजल।

एक स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि मक्का के जिन सरदारों ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मारना चाहा, क्या आज दुनिया में उन लोगों का कोई नाम लेवा है? तुम देखोगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम पर तो करोड़ो आवाज़ें बुलन्द होना शुरु हो जाएँगी तथा पूरा विश्व बोल उठेगा कि हाँ, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हममें मौजूद हैं क्यूँकि आप स. के प्रतिनिधि होने का सौभाग्य हमें प्राप्त है किन्तु अबू जहल के बुलाने पर तुम्हें किसी कोने से भी आवाज़ उठती सुनाई नहीं देगी।

फिर इस बारे में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि नबियों पर जो विपत्तियाँ आती हैं उनमें भी अल्लाह तआला के हज़ारों भेद होते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनेक विपत्तियाँ आती थीं। एक रिवायत में है कि ओहद के युद्ध में आप स. को सत्तर तलवारों के घाव लगे थे और मुसलमानों की ज़ाहिरी हालत ख़राब देख कर काफ़िरों को बड़ी ख़ुशी हुई।

ऐसी कटुताओं को देखना भी आवश्यक होता है। मक्का से निकलते समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कैसी कठिनाई का समय था परन्तु अब अल्लाह तआला ने प्रस्थितियाँ बदल दीं।

हज़रत हंज़ला रज़ी. की शहादत का वर्णन बयान होता है, उनकी पतनी बताती हैं कि मेरे पति को जब पता चला कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध के लिए प्रस्थान कर गए हैं तो मेरे पति पर स्नान करना अनिवार्य था परन्त् नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जाने की ख़बर सुन कर इतनी जल्दी एवं व्याकुल भावना के साथ घर से निकले कि स्नान करना भी आवश्यक नहीं समझा तथा तलवार लेकर युद्ध के मैदान की ओर चल पड़े। उन्हें शद्दाद बिन असवद ने शहीद कर दिया था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी शहादत पर फ़रमाया कि मैं फ़रिश्तों को देख रहा हूँ कि वे आसमान एवं ज़मीन के बीच चाँदी के बर्तनों में स्वच्छ जल लिए हंज़ला रज़ी. को स्नान करा रहे हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा है कि अब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मैदान में उतर आए हुए थे तथा शहीदों के शवों की देख भाल शुरु थी। जो दृश्य उस समय मुसलमानों के सामने था वह ख़ून के आँसू रुलाने वाला था। सत्तर मुसलमान धूल मिट्टी एवं ख़ून में लुथड़े हुए मैदान में पड़े थे तथा अरब की बर्बतापूर्ण प्रथा अर्थात शवों को कुचलने का भयावह दृश्य पेश कर रहे थे। इन मृतकों में कवेल छः महाजिर थे तथा शेष सब अन्सार थे। क़ुरैश के मृतकों की संख्या तेईस थी। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चाचा तथा दूध बोले भाई हमज़ा बिन मुत्तलिब रज़ी. के शव के पास पहुंचे तो भौंचक्का होकर रह गए क्यूँकि अबू सुफ़यान की दुष्ट पतनी हिन्द ने उनके शव को बुरी तरह बिगाड़ा हुआ था। थोड़ी देर तक तो आप स. चुपचाप खड़े रहे और आप स. के चेहरे से दुःख एवं खेद के प्रभाव स्पष्ट हो रहे थे। एक क्षण के लिए आप स. का विचार इस ओर भी गया कि मक्का के इन असभ्य पिशाचों के साथ जब तक इन्हीं जैसा व्यवहार न किया जाएगा वे सम्भवतः होश में नहीं आएँगे, परन्तु आप स. इस विचार से रुक गए तथा धैर्य से काम लिया बल्कि इसके बाद भी आप स. ने शवां को कुचलने की इस प्रथा को इस्लाम में सदैव के लिए वर्जित घोषत कर दिया तथा फ़रमाया- शत्रु चाहे जो करे, तुम इस बंबरतापूर्ण व्यवहार से हर हाल में बचे रहो तथा नेकी एवं उपकार करने का तरीक़ा धारण करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. के शव को भी बुरी तरह बिगाड़ा गया था। जैसे जैसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक शव से हट कर दूसरे शव की ओर जाते थे, आपके मुख पर शोक एवं दुःख के लक्षण अधिक होते जाते थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने उन शहीदों तथा उनके बलिदानों का वर्णन करते हुए सअद बिन रबीअ रज़ी. के बारे में उनके आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ व मुहब्बत का वर्णन करते हुए इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि देखो ऐसे समय पर जब इंसान समझता है कि मैं मर रहा हूँ, क्या क्या विचार उसके दिल में आते हैं। वह सोचता है कि मेरी बीवी का क्या हाल होगा, मेरे बच्चां को कौन

पूछेगा। किन्तु इस सहाबी ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया, केवल यही कहा कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा करते हुए इस दुनिया से जाते हैं, तुम भी इसी रास्ते से हमारे पीछे आ जाओ। उन लोगों के अन्दर यही ईमान की शक्ति थी जिससे उन्होंने दुनिया को ऊपर नीचे कर दिया तथा क़ैसर व किसरा के राज्यों को नष्ट कर दिया। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि मरने वाले की यही इच्छा होती है कि कुछ क्षण भी और मिल जाएँ तो बीवी बच्चों तथा बहन भाईयों से कोई बात हो जाए, उनके लिए कोई वसीय्यत कर जाऊँ, परन्तु वे सहाबी पत्थरीली धरती पर पड़े थे एवं ऐसी अवस्था में भी उन्होंने यह सन्देश दिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारे पास ख़ुदा तआला की बहुमूल्य धरोहर है। मैंने अपने प्राणों की बलि देकर भी इस अमानत की रक्षा की तथा अब अपने प्रिय भाईयों तथा बच्चों को मेरी अन्तिम वसीय्यत है कि वे भी अपने प्राणों के साथ इस धरोहर की रक्षा करें, और यह कह कर दम तोड़ दिया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ऐसी ऐसी इश्क़े रसूल की अभिव्यक्तियाँ हैं कि इंसान चकित रह जाता है। अल्लाह तआला हमारे अन्दर भी इश्क़े रसूल स. की उस रूह को पैदा फ़रमाए और जब यह सोच पैदा होगी तो हम अल्लाह तआला से सम्बंध में भी बढ़ेंगे और अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की भी वास्तविक कोशिश करेंगे ताकि हम सही इस्लामी रंग में अपनी इबादतों, अपने शिष्टाचार तथा अपनी आदतें पैदा करें, अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

खुत्बः के दूसरे भाग में हुज़ूर अनवर ने कुछ मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया सबसे पहले डाक्टर मंसूर शबूती साहब ऑफ़ यमन की वफ़ात को शहादत घोषित करते हुए फ़रमाया कि इनको अहमदियत के कारण बन्दी बनाया गया था तथा कारागार में ही इनकी मृत्यु हुई इस लिए ये शहीद ही कहलाएंगे तथा इस दृष्टि से ये यमन के पहले शहीद अहमदी हैं। मरहूम यमन के विख्यात डाक्टर थे। इसके बाद मुकर्रम सलाहुद्दीन मुहम्मद सालेह अब्दुल क़ादिर औदा साहब वालिद मुहम्मद शरीफ़ औदा साहब अमीर जमाते अहमदिया कबाबीर के सद्वर्णन में फ़रमाया कि मरहूम ख़िलाफ़त के चाहने वाले तथा जमाअत के निज़ाम को अत्यंत सम्मान देने वाले थे। तीसरा सद्वर्णन रीहाना फ़रहत साहिबा पतनी करामतुल्लाह ख़ादिम साहब रबवा का था। हुज़ूरे अनवर ने जुम्अः की नमाज़ के बाद इन मृतकों के जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131